- # गाजीपुर में पर्यटन की दृष्टि से कुछ विशेष स्थान।
- # <u>भगवान परशुराम का अष्टकोणीय मंदिर</u>

- महर्षि यमदग्नि की तपोस्थली और भगवान परशुराम की जन्मस्थली के नाम से जमानियां ख्यात है। नगर पालिका के हरपुर में एनएच 24 किनारे भगवान परशुराम का मंदिर स्थित है। मान्यता है कि आज से ढाई सौ वर्ष पूर्व सकलडीहा कोट के तत्कालीन राजा वत्स सिंह ने पूर्ण धार्मिक अनुष्ठान के साथ भगवान परशुराम की मूर्ति की प्राण- प्रतिष्ठा की थी।
- किवंदती है कि राजा वत्स की रियासत जमानियां में होने के कारण वह अपने यहां आते थे। एक दिन रात्रि में भगवान परशुराम स्वप्न में आकर उनसे कहा कि मेरे पिता यमदग्नि के आश्रम के सामने गंगा के बीच में मेरी मूर्ति है जिसे निकलवाकर 360 धनुष की दूरी पर मुझे स्थापित करें, जिससे क्षेत्र का कल्याण हो सके। सुबह राजा ने तुरंत मछुआरों से मूर्ति निकलवाई। इसके बाद राजा ने 360 धनुष की दूरी को नापा तो नगर पालिका क्षेत्र का हरपुर पड़ा जहां राजा ने अनुष्ठान के साथ भगवान परशुराम की मूर्ति प्रतिष्ठित कर मंदिर बनवाया।
- हरपुर में स्थित यह मंदिर कई मामलों में अनूठा है। यह अष्टकोणीय और पंचायतन है। राजा वत्स ने ही मंदिर के पूरब कोने में भगवान गणेश, पश्चिम तरफ कोने में भगवान सूर्य नारायण, उत्तर तरफ मां भगवती के साथ पूरब-उत्तर के कोने में भगवान शंकर की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की थी। इन चारों देवी-देवताओं के बीच भगवान परशुराम की मूर्ति विराजमान है। यह मंदिर दो बिस्वा में फैला हुआ है।
- त्रेता युग से लेकर कलियुग तक कई शताब्दियों के इस सफर में आज भी हरपुर में परशुराम जयंती के दिन श्रद्धालुओं का तांता लगता है। उस दिन वहां पर मेला लगता है ।

• माँ कामाख्या मन्दिर

- यह मंदिर गाज़ीपुर जिले में सेवराई तहसील के अंतर्गत गहमर (करहिया) नामक ग्राम में स्थित हैं।

- मिर्ज़ापुर में स्थापित शक्तिपीठ माँ विंध्याचल देवी (विंध्यवासिनी देवी) के बाद यदि दूसरा मंदिर मनोकामना पूर्ति वाला माता जी का मंदिर हैं, तो वह "माँ कामाख्या मंदिर धाम" हैं।

- पर्यटन की दृष्टि से यह बहुत ही सुंदर और मनोरम स्थान है , हर वर्ष यहां हजारों लोग यहां पर माता के दर्शन करने आते है।

- ऐसी मान्यता है की जो भी भक्त सच्चे दिल से अपनी मनोकामना लेकर आता है ,उसकी मनोकामना अवश्य पूरी होती है।
- नवरात्रि के पावन नौ दिनों तक यहाँ मेला का आयोजन किया जाता हैं।

- मंदिर परिसर के पास ही एक तालाब बना हुआ हैं, जिसके चारों तरफ सीढ़ियां बनी हैं। जहाँ भक्त स्नान आदि भी कर सकते हैं। वन विभाग उत्तर प्रदेश के सौजन्य से एक छोटा सा पार्क भी मंदिर के समीप ही बना हुआ हैं। मुख्य रूप से माता कामख्या की मूर्ति केंद्र में हैं जबकि परिसर में अन्य देवी और देवताओं की मूर्तियां स्थापित हैं।

• सिद्धपीठ हथियाराम मठ

- गाज़ीपुर केंद्र से 40 किलोमीटर दूरी पर जखनिया तहसील में स्थित है, जखनिया तहसील मुख्यालय से 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

- सिद्धपीठ हथियाराम मठ की परंपरा करीब 700 साल पुरानी है तथा यह देश की प्रसिद्ध सिद्धपीठों में शुमार है। इस मठ की शाखाएं देश के कोने-कोने में फैली हुई है जिसके लाखों शिष्य हैं।

- लगभग 650 वर्ष पूर्व बेसो नदी के किनारे घनघोर जंगल में तपस्या कर रहे विशालकाय शरीर वाले संत जो लोगों को कभी-कभी हाथी के रूप में भी दर्शन देते थे ऐसे हाथी वाला बाबा के नाम से गांव का नाम हथियाराम पड़ा। वहीं संत मुरार नाथ महाराज सिद्धपीठ के संस्थापक बने, जिनके द्वारा स्थापना के बाद यह पीठ निरंतर अध्यात्म व सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में एक मिसाल स्थापित करता नजर आया

- सिद्धपीठ के 26वें पीठाधिपति के रूप में महामंडलेश्वर स्वामी भवानीनंदन यति जी महाराज आज इस सिद्धपीठ का नेतृत्व कर रहे हैं। हथियाराम मठ के अंदर ही सिद्धिदात्री माता का मंदिर है, यहां पर बुढ़िया माई का मंदिर भी है जिसकी मान्यता है कि उनके दर्शन करने मात्र से ही लकवाग्रस्त रोगी ठीक हो जाता है ।

- पर्यटन की दृष्टि से यह बहुत ही मनोरम स्थान है।

• <u>महाहर धाम महादेव मंदिर</u>

- गाजीपुर जिला मुख्यालय से एनएच-29 जो गोरखपुर होते हुए नेपाल को जाता है। इसी सड़क पर पूर्व दिशा में तकरीबन 35 किलोमीटर दूरी पर यह मंदिर स्तिथ है।
- गाजीपुर का मरदह क्षेत्र खुद में पौराणिक और सांस्कृतिक धरोहर समेटे है। गाजीपुर के मरदह स्थित महाहर धाम में प्राचीन तेरह मुखी शिवलिंग स्थापित है। जहां महाशिवरात्रि पर भक्तों का रेला उमड़ता है तो वहीं पूरे सावन माह मंदिर परिसर घंटों की आवाज से गुंजायमान रहता है।
- ऐसी मान्यता है कि इस धाम का निर्माण राजा दशरथ ने कराया था। ऐसा माना जाता है कि महाहर धाम में राजा दशरथ का शब्दभेदी बाण गलती से श्रवण कुमार को जा लगा, जिससे उसकी वहीं मौत हो गई थी। यही वो स्थान है जहां श्रवण कुमार के अंधे और बूढ़े मां -बाप ने राजा दशरथ को श्राप दिया था और उन्होंने भी यहीं प्राण त्यागे थे। बाद में ब्रह्म हत्या से बचने के लिए राजा दशरथ ने इस स्थान पर शिव परिवार व भगवान ब्रह्मा की स्थापना की।
- लोगों की मानें तो राजा दशरथ यहां महल बनाकर अयोध्या से आते-जाते रहते थे।
- लोगों का मानना है कि राजा दशरथ की गढ़ी जो जमीन के नीचे दबी पड़ी है उसमें खजाना दबा हुआ है। जिसे कई बार निकालने की कोशिश हुई लेकिन कोई कामयाब नहीं हुआ और आज भी वह रहस्य का विषय बना हुआ है। यह महल दशरथ के गढ़ी के नाम से विख्यात है।

• <u>पवहारी बाबा आश्रम</u>

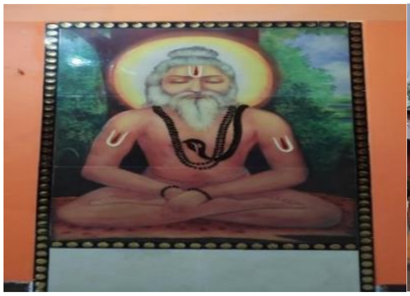

- यह आश्रम गाजीपुर केंद्र से 5 किलोमीटर दूरी पर दक्षिण पश्चिम में आदर्श बाजार से दक्षिण कायाकोट उर्फ कुर्था में स्थित है।
- पवहारी बाबा उन्नीसवीं शताब्दी के एक भारतीय तपस्वी और संत थे। विवेकानंद के अनुसार वे अद्‌भुत विनय-संपन्न एवं गंभीर आत्म-ज्ञानी थे। उनका जन्म लगभग 1800 ई॰ में वाराणसी के निकट एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बचपन में वह गाजीपुर के समीप अपने संत, ब्रह्मचारी चाचा के आश्रम विद्याध्ययन के लिए आ गए थे। अपनी पढ़ाई समाप्त करने के बाद उन्होंने भारतीय तीर्थस्थलों की यात्रा की। काठियावाड़ के गिरनार पर्वत में वे योग के रहस्यों से दीक्षित हुए।
- अमेरिका आने के ठीक पहले स्वामी विवेकानंद गाजीपुर पवहारी बाबा का दर्शन करने गए थे। ऐसा कहा जाता है की पवहारी बाबा किसी से मिलते नहीं थे। वो केवल एक कमरे में ही निवास करते थे। लेकिन स्वामी विवेकानंद जी को उन्होंने अपना दर्शन दिया था और उनके प्रश्नों और समस्याओं का समाधान भी किया था।
- तीर्थ भ्रमण के पश्चात वे वापस गाजीपुर लौट आये, और वहां उन्होंने अपनी साधना जारी रक्खी. अपने आश्रम की कुटिया में उन्होंने साधना के लिए एक भूमिगत गुफा का निमार्ण किया जिसमें बैठ कर वे दिनों-दिन साधना किया करते थे।

शहीद पार्क व शहीद स्तंभ,स्मारक मुहम्दाबाद

- गाजीपुर के मुहम्दाबाद तहसील मुख्यालय पर बना शहीद स्मारक, शहीद स्तंभ, और शहीद पार्क बाजार के बिल्कुल बीच में स्थित है।
- जब आजादी की बात होती है तो जेहन में 18 अगस्त 1942 का वह दिन याद आ जाता है, जब महात्मा गांधी के 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आंदोलन के आ वह तहसील भवन पर झंडा फहराने के लिए परिसर में घुसने लगे और तहसीलदार ने गोली ह्वान पर जिले के शेरपुर के आंदोलित आजादी के आठ दीवाने शहीद हो गए। चलाने का आदेश दिया। आठ लोग शहीद हो गए फिर भी तहसील पर तिरंगा फहरा कर ही माने। हर साल इस दिन शहीद स्तंभ पर शहादत दिवस मनाया जाता है।
- गांधीजी के आह्वान पर 14 अगस्त 1942 को शेरपुर के यमुना गिरी के नेतृत्व में युवा गौसपुर हवाई अड्डा पर पहुंचकर उसमें आग लगा दिए। वहां सुरक्षा में तैनात अंग्रेज सिपाहियों ने हवाई फायरिंग शुरू कर दी। फायरिंग में यमुना गिरी घायल हो गए, जिन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।18 अगस्त 1942 को शेरपुर के डा. शिवपूजन राय के नेतृत्व में युवकों का जत्था तहसील भवन पर झंडा फहराने के लिए चल दिया। युवकों के सीने में यमुना गिरी का बदला लेने की आग धधक रही थी। आंदोलनकारी युवा बड़की बारी गांव के पास एकत्रित हुए और वहां से निहत्थे तिरंगा लेकर तहसील पर पहुंचकर तहसील भवन पर झंडा फहराने के लिए चढ़ने लगे। अंग्रेजी सरकार के गुलाम तहसीलदार ने उन्हें झंडा फहराने से रोका। युवकों के न मानने पर उन पर गोली चलाने का आदेश दिया, इसके बावजूद युवक पीछे हटने के बजाय आगे बढ़ते गए सीने पर गोलियां खाते रहे, लेकिन तिरंगे को झुकने नहीं दिया।गोली लगने से डा. शिवपूजन राय, वंश नारायण राय, ऋषेश्वर राय, श्रीनारायण राय, वंशनारायण राय, राजा राय, वशिष्ठ नारायण राय व रामबदन उपाध्याय शहीद हो गए। बुरी तरह से जख्मी सीताराम राय को मृत समझकर अंग्रेज कठवामोड़ बेसो नदी में ले जाकर फेंक दिए, जो काफी दिनों तक जीवित रहे। उन्हें लोग जिंदा शहीद के नाम से जानते थे।

• लार्ड कार्नवालिस का मकबरा

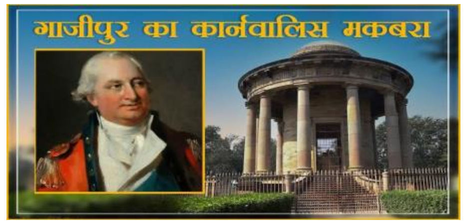

- नगर के गोराबाजार में बना उनका भव्य मकबरा जनपद का सबसे प्रमुख प्रर्यटक स्थल है।
- अपनी अद्भुत कलाकृति के लिए मशहूर इस मकबरे को देखने के लिए विदेशी सैलानी भी आते हैं।
- लार्ड कार्नवालिस की मृत्यु पांच अक्टूबर 1805 को गाजीपुर के गौसपुर गांव के पास 66 वर्ष की उम्र में हो गई। वह बुखार से पीड़ित थे। मौत के बाद उनको नगर के पास स्थित गोराबाजार में दफना दिया गया। उस स्थान पर शानदार मकबरा बनाया गया है और 10 बीघे के क्षेत्रफल में बड़ा पार्क भी बनाया गया है।
- पांच गज मोटे, बारह-बारह विशाल व 40 फुट ऊंचे खंभों पर खड़ा पांच प्रस्तर खंड वाला यह मकबरा देखने लायक है। इसके हलके गुलाबी रंग के पत्थरों पर कहीं दाग नहीं हैं । सोलह सीढ़ी को पार कर उसकी ऊंचाई पर पहुंचा जा सकता है। इसमें, चार तरह के पत्थर है। खंभों में प्रयोग किए गए पत्थर पर नीले छींटे हैं। फूल पत्तियों की सजावट और ब्रिटिश सरकार का राजकीय चिन्ह, दाहिनी ओर पत्र बंध की एक माला और खूब उभरी हुई, आकर्षक शिल्प चमत्कार से युक्त है। सामने अंग्रेजी में और पीछे फारसी में लार्ड कार्नवालिस के आने और दिवंगत होने आदि की सूचना और परिचय है।
- यह मकबरा यूरोप व भारत के वेस्टर्न का समन्वय है। एक बड़े भू-भाग पर बना यह गोल स्मारक हमें दृढ़ता का संदेश देता है। संगमरमर का फर्श और मध्य स्तम्भ का दुग्ध धवल पत्थर अद्भुत है। सामने अंदर जाली में लार्ड कार्नवालिस का आधा ऊपरी शीर्ष भाग, जिसके अगल बगल हिदू और मुसलमान शोकमग्न खड़े हैं। बीच में कमल का फूल, बाएं पाश्व में पत्रमाला का शुक्षम कलात्मक बंधक पीछे को और दो सिपाही बंदूक नीचे किए मुरझाए खड़े हैं।
- अपनी अद्भुत कलाकृति के लिए मशहूर इस मकबरे को देखने के लिए विदेशों से भी पर्यटक यहां आते हैं।

- # <u>सैदपुर भीतरी गांव</u>

- <u>भीतरी, उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में सैदपुर से उत्तर-पूर्व की ओर लगभग पाँच मील की दूरी पर स्थित ग्राम है। ग्राम से बाहर चुनार के लाल पत्थर से निर्मित एक स्तंभ खड़ा है जिसपर गुप्त शासकों की यशस्वी परंपरा के गुप्त सम्राट स्कंदगुप्त का अभिलेख उत्कीर्ण है।</u>
- <u>भीतरी, उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में सैदपुर से उत्तर-पूर्व की ओर लगभग पाँच मील की दूरी पर स्थित ग्राम है। ग्राम से बाहर चुनार के लाल पत्थर से निर्मित एक स्तंभ खड़ा है जिसपर गुप्त शासकों की यशस्वी परंपरा के गुप्त सम्राट स्कंदगुप्त का अभिलेख उत्कीर्ण है। यद्यपि लेख ऋतुघृष्ट है, पत्थर यत्र तत्र टूट गया है तथा बाईं ओर ऊपर से नीचे तक एक दरार सी है तथापि संपूर्ण लेख मूल स्तंभ पर पूर्णतया स्पष्ट है तथा उसका ऐतिहासिक स्वरूप सुरक्षित सा है।</u>
- लेख की भाषा संस्कृत है। छठीं पंक्ति के मध्य तक गद्य में है, शेष पद्य में है। लेख पर कोई तिथि अकित नहीं है। इसका उद्देश्य शार्ङ्गिन विष्णु की प्रतिमा की स्थापना का अभिलेखन तथा उस ग्राम को, जिसमें स्तंभ खड़ा है, विष्णु को समर्पित करना हैं।
- भीतरी का स्तंभलेख ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उसमें गुप्त साम्राज्य पर पुष्पमित्रों तथा हूणों के बर्बर आक्रमण का संकेत है। लेख के अनुसार पुष्पमित्रों ने अपना कोष और अपनी सेना बहुत बढ़ा ली थी और सम्राट कुमारगुप्त की मरणासन्नावस्था में उन्होंने गुप्त साम्राज्य पर आक्रमण किया। युवराज स्कंदगुप्त ने सेना का सफल नेतृत्व किया। उसने युद्धक्षेत्र में पृथ्वीतल पर शयन किया। पुष्पमित्रों को परास्त कर पिता कुमारगुप्त की मृत्यु के अनंतर स्कंदगुप्त ने अपनी विजय का संदेश साश्रुनेता माता को उसी प्रकार सुनाया जिस प्रकार कृष्ण ने शत्रुओं के मारकर देवकी को सुनाया था।
- यह गांव गाजीपुर में ऐतिहासिक स्थलों में से एक है।

• रेवतीपुर मां भगवती देवी मन्दिर

- गाजीपुर के पूरब दिशा में स्थित आस्था व विश्वास का प्रतीक रेवतीपुर गांव के मध्य में स्थित मां भगवती देवी का मंदिर श्रद्धालुओं के सभी मुरादों को पूरा करने के कारण पूरे क्षेत्र में चर्चित है।
- बारहों महीने यहां अखंड दीपक जला करता है। बीच बीच में सवा माह का हरिकीर्तन हुआ करता है।
- मान्यता है कि मुस्लिम शासन काल में काम मिश्र व धाम मिश्र ने फत्तेहपुर सिकरी से मां की मूर्ति लाकर यहां पर स्थापित किए। ब्रिटिश हुकूमत में अकाल पड़ जाने के कारण लोगों को भूखे मरने की नौबत आ गयी थी परंतु इस दशा में भी तत्कालीन प्रशासन ने लोगों से लगान वसूलने का फरमान जारी कर दिया। इससे लोगों में हड़कंप मच गया था। तभी मां ने एक वृद्धा का रूप धारण करके पूरे गांव का लगान अंग्रेजों के पास ले जाकर चुकाया और लोगों को इस मुसीबत से छुटकारा दिलाई। किदवंतियों के अनुसार बलिबंड खां पहलवान के उपर मां का आशीर्वाद था। वह मां के अनन्य भक्त थे। उन्होने स्वप्न में मां का दर्शन भी किया था। इस तरह यह धाम समरसता व भाईचारे का भी प्रतीक है।
- मंदिर पंचतलीय है। प्रत्येक तल में विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियों की नक्काशी है। इन मूर्तियों से अद्भूत नक्काशी कला के बारे में पता चलता है। मां की मूर्ति के पास लगे खंभो को लोगो ने उस समय यातायात सुविधाओं के अभाव के कारण अपने कंधो पर लाकर मंदिर में स्थापित किया था।

माता कष्टहरणी भवानी मंदिर

- कष्टहरणी भवानी मंदिर उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के करीमुद्दीनपुर ग्राम में स्थित है। इस धाम के बारे में मान्यता है कि यह पद्मपुराण और वाल्मीकि रामायण में वर्णित देवी का वो मंदिर है जहां भगवान राम ने गुरू विश्वामित्र और अनुज लक्ष्मण के साथ अयोध्या से बक्सर जाते समय पूजा अर्चना की थी।
- पौराणिक कथाओं के अनुसार यह स्थान पहले दारूकवन के नाम से प्रसिद्ध था। तो वहीं जनश्रुतियों के अनुसार वानप्रस्थ के समय महाराज युधिष्ठिर अपने भाइयों, पत्नी द्रौपदी व कुल पुरोहित धौम्य ऋषि के साथ इस स्थान पर कुछ दिनों तक विश्राम करते हुए देवी की पूजा-अर्चना की थी।
- अघोरेश्वर बाबा कीनाराम को तो मां कष्टहरणी ने स्वयं अपना प्रसाद प्रदान कर पहली सिद्धी से परिपूर्ण किया था।

- ## परमवीर चक्र विजेता अब्दुल हमीद

- अब्दुल हमीद भारतीय सेना की 4 ग्रेनेडियर में एक सिपाही थे जिन्होंने 1965 के भारत-पाक युद्ध के दौरान खेमकरण सैक्टर के आसल उत्ताड़ में लड़े गए युद्ध में अद्भुत वीरता का प्रदर्शन करते हुए वीरगति प्राप्त की जिसके लिए उन्हें मरणोपरान्त भारत का सर्वोच्च सेना पुरस्कार परमवीर चक्र मिला।
  अब्दुल हमीद का जन्म उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के धामूपुर गाँव में 1 जुलाई 1933 में एक साधारण, परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम सकीना बेगम और पिता का नाम मोहम्मद उस्मान था।
- अब्दुल हमीद 27 दिसम्बर 1954 को भारतीय सेना के ग्रेनेडियर रेजीमेंट में भर्ती हुए। बाद में उनकी तैनाती रेजीमेंट के 4 ग्रेनेडियर बटालियन में हुई जहां उन्होंने अपने सैन्य सेवा काल तक अपनी सेवाएं दीं। उन्होंने अपनी इस बटालियन के साथ आगरा, अमृतसर, जम्मू-कश्मीर, दिल्ली, नेफा और रामगढ़ में भारतीय सेना को अपनी सेवाएं दीं।
- भारत-चीन युद्ध के दौरान अब्दुल हमीद की बटालियन सातवीं इंफैन्ट्री ब्रिगेड का हिस्सा थी जिसने ब्रिगेडियर जॉन दलवी के नेतृत्व में नमका-छू के युद्ध में पीपल्स लिबरेशन आर्मी से लोहा लिया।
- उनके पैतृक गांव धामपुर में उनके स्मारक में एक पार्क बनाया गया है जिसमे उनकी मूर्ति और शिलापट्ट लगा हुआ है, जिसमे उनकी गौरव गाथा को स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया है।
- 1965 के युद्ध में पाकिस्तान की 8 पैटन टैंक को उड़ाने वाली धामूपुर शहीद पार्क में रखी गई है वीर अब्दुल हमीद की आरसीएल गन जो वहां जाने वाले पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है।

- # <u>एशिया का सबसे बड़ा गांव गहमर</u>

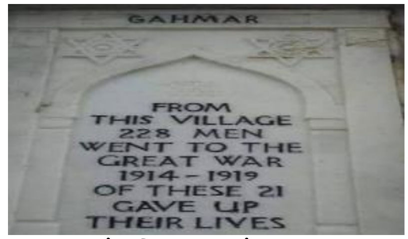

- **गहमर उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले का एक गाँव है। यह गाँव भारत का सबसे बड़ा गाँव है। यह एशिया महाद्वीप का सबसे बड़ा गांव है | यह पटना और मुगलसराय रेल मार्ग पर स्थित है | गाँव के पश्चिम छोर पर कमइच्छा माई (माँ कामाख्या) का मंदिर स्थित है ।**
- **इस गांव के करीब 10 हजार लोग इंडियन आर्मी में जवान से लेकर कर्नल तक हैं, जबकि 14 हजार से ज्यादा भूतपूर्व सैनिक हैं।**
- **रिकॉर्ड के मुताबिक, 2009 के लोकसभा चुनाव में गांव में 24 हजार 734 वोटर्स रहे।**
- **गांव गाजीपुर से 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गहमर में एक रेलवे स्टेशन भी है, जो पटना और मुगलसराय से जुड़ा हुआ है।**
- **इतिहासकारों के मुताबिक, सन् 1530 में कुसुम देव राव ने 'सकरा डीह' नामक स्थान पर इसे बसाया था।**
- **गांव 22 टोले में बंटा हुआ है और हर पट्टी किसी न किसी प्रसिद्ध व्यक्ति सैनिक के नाम पर हप्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध हो या 1965 और 1971 के युद्ध या फिर कारगिल की लड़ाई, सब में यहां के फौजियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।**
- **विश्वयुद्ध के समय अंग्रेजों की फौज में गहमर के 228 सैनिक शामिल थे, जिनमें 21 मारे गए थे। इनकी याद में गहमर में एक शिलालेख लगा हुआ है।**
- **यहां की जनसंख्या लगभग 1 लाख 20 हजार से भी अधिक है। वर्तमान समय में 2 लाख से भी अधिक जनसंख्या है। जबकि यहां से 50% से भी अधिक लोग दुसरे शहर में स्थित है।**

संग्रहकर्ता

सारंग राय

सपर्क सूत्र :9792741919